ऑनलाइन पाठ्य सामग्री

वर्ग — स्नातक प्रथम वर्ष (प्रतिष्ठा)
विषय — हिन्दी
पत्र — प्रथम
शीर्षक — प्रमुख नाथ कवियों का परिचय (भाग-1)

प्रमुख नाथ कवि

नाथों की संख्या प्रधानतः नौ मानी गई है। आठ दिशाओं के रक्षक-रूप में आठ सिद्ध और मध्य में आदिनाथ (शिव) का निवास माना गया है। किन्तु इन नौ नाथों के अतिरिक्त अन्य नामों का भी उल्लेख किया जाता है। हठयोग प्रदीपिका में अनेक नामों का उल्लेख है, जैसे — आदिनाथ (शिव); मत्स्येन्द्र नाथ (मच्छन्दर नाथ), गोरखनाथ (गोरक्षनाथ), सारदानन्द, भैरव, चौरंगी, मीन नाथ, विरूपाक्ष, सिद्ध बुद्ध, कन्हड़ी नाथ, कोरण्टक नाथ, सुरानंद, सिद्धपाद, चर्पटी नाथ, कनेरीनाथ, पूज्यपाद, नित्यनाथ, निरंजन नाथ, कपिल नाथ, बिन्दुनाथ, काक चण्डीश्वर, अयनाथ, भतलरी, नागबोध, आलमनाथ, प्रभुदेव, घोड़ा चोलीनाथ, टिंटिणीनाथ आदि। किन्तु जो मूल नौ नाथ माने गए हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं — आदिनाथ, मत्स्येन्द्र नाथ, गोरखनाथ, जालंधर नाथ, नागार्जुन, सहसार्जुन, दत्तात्रेय, देवदत्त, तथा

जड़ भरत। यहाँ प्रस्तुत सभी नाथ कवियों एवं उनके उनके साहित्य का परिचय प्रस्तुत है।

1. मत्स्येन्द्र नाथ :—

नाथ संप्रदाय का प्रवर्तक आदिनाथ (शिव) को माना जाता है लेकिन लोक में मत्स्येन्द्र नाथ को इस परंपरा का प्रथम आचार्य माना जाता है। मत्स्येन्द्र नाथ को मीन नाथ के नाम से भी जाना जाता है, कतिपय लोगों ने मत्स्येन्द्र नाथ को तथा मीन नाथ में पिता-पुत्र का संबंध की कल्पना की है, किन्तु यह कल्पना सार्थक प्रतीत नहीं होती। ये गोरखनाथ के गुरु थे।

मत्स्येन्द्र नाथ कौल साधक माने जाते हैं। कौल साधना में साधक कुण्डलिनी स्थित शक्ति को उद्बुद्ध करता है। मत्स्येन्द्र नाथ का विभिन्न संप्रदायों में उल्लेख मिलता है। बौद्ध ग्रंथों में प्राप्त मत्स्येन्द्रनाथ के पद इस बात के प्रतीक हैं कि आरंभ में इनका संबंध बौद्ध संप्रदाय से था। इसके अतिरिक्त इनका संबंध योगिनी और अद्वैत तांत्रिक मत से भी जोड़ा जाता है। इस प्रकार के अनेक प्रमाण और लोक-कथाएँ मिलती हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि मत्स्येन्द्रनाथ का संबंध वाममार्गी साधना से था। वाम-मार्गी साधना के कारण मत्स्येन्द्र नाथ और

गोरखनाथ में मतभेद हो गया था। गोरखनाथ ने अपने गुरु मत्स्येन्द्रनाथ का वाममार्गी साधना से उद्धार किया था। इस प्रकार के संकेत 'मीन-चेतन', तथा 'गोरख विजय', तथा 'गोरख-बानी' जैसे ग्रंथों से मिलते हैं।

" गुरुजी ऐसा करम न कीजै,
ताथैं, अमीं महारस छीजै। "

'कौल निर्णय'; 'अकुलवीर तंत्र', 'ज्ञानकारिका', 'कुलानंद', आदि मत्स्येन्द्र नाथ के लिखे प्रमुख ग्रंथ माने जाते हैं।

डॉ० मेनका कुमारी
सहायक प्राध्यापक (अतिथि), हिन्दी
ए० पी० एस० एम० कॉलेज, बरौनी
ललित नारायण मिथिला विवि, दरभंगा।